चीनी उत्पादन के गुर सीखेगा श्रीलंका

लखनऊ। प्रमुख संवाददाता

चीनी का उत्पादन बढ़ाने के गुर सीखने के लिए श्रीलंका सरकार भारतीय गन्ना अनुसंस्थान संस्थान (आईआईएसआर) के वैज्ञानिकों और प्रदेश के चीनी मिल मालिकों को अपने यहां बुलाएगी। वहां के विशेषज्ञों व उद्योगपतियों को यहां भेजेगी ताकि वे यहां चीनी उत्पादन के आधुनिक तकनीक सीख सकें।

सोमवार को आईआईएसआर पहुंचे श्रीलंका के चीनी उद्योग विकास मंत्री लक्षमण सेनेविरत्ने ने यह बात कही। उन्होंने संस्थान के फार्मो व प्रयोगशालाओं का दौरा भी किया। संस्थान के वैज्ञानिकों से चीनी उत्पादन में वृद्धि की तकनीक की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि श्रीलंका में पहली बार चीनी उद्योग मंत्रालय बना है जिसके वे मंत्री हैं। श्रीलंका अपनी आवश्यकता का मात्र छह फीसदी चीनी का ही उत्पादन कर पाता है। जबकि 94 प्रतिशत चीनी का आयात किया जाता है।

उन्होंने कहा कि श्रीलंका अब चीनी उत्पादन में आत्म निर्भर बनना चाहता है। वहां चीनी के उत्पादन को बढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। इसके लिए श्रीलंका सरकार उत्तर प्रदेश के चीनी मिल मालिकों को भी वहां आमंत्रित करेगी ताकि वे गन्ने के उत्पादन वृद्धि के साथ-साथ चीनी उत्पादन के आधुनिक तकनीक बता सकें। निदेशक डा. एस सोलोमन ने कहा कि मेहमान मंत्री मंगलवार को यहां के चीनी मिलों का दौरा करेंगे। पांच दिनों की भारत यात्रा पर आए श्रीलंका के मंत्री के साथ चीनी उद्योग के सीईओ व वहां के गन्ना अनुसंधान संस्थान के फसल विकास विभाग के अध्यक्ष भी आए हैं। प्रसं

मंगलवार, 18 जून 2013, ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष दशमी, संवत् 2070 विक्रमी वर्ष-6, अंक-240,

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

RNI NO.: UPHIN/

श्रीलंका को सिखाएंगे गन्ने की खेती

डेली न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। श्रीलंका में गन्ना खेती और चीनी उद्योग को बढ़ावा देने में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) अहम भूमिका निभा सकता है। जिससे भारत और श्रीलंका के बीच एक हजार से भी ज्यादा वर्षों के आपसी रिश्तों को और मजबूती मिलेगी। यह बात श्रीलंका के केंद्रीय चीनी उद्योग मंत्री लक्ष्मण सेनाविरत्ने ने सोमवार को आईआईएसआर में कही। केंद्रीय मंत्री के अलावा श्रीलंका गन्ना शोध संस्थान के वैज्ञानिकों का एक दल संस्थान के औपचारिक भ्रमण पर आया हुआ है। इस दल में श्रीलंका गन्ना शोध संस्थान के निदेशक डॉ. एपी कोर्थिपाला और फसल सुधार विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए विजयसूरिया शामिल हैं।

आईआईएसआर के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने कहा कि पिछले साठ सालों में संस्थान ने अनेकों तकनीकों का विकास किया है। जिसके प्रयोग से आज देश लगभग 350 मिलियन टन गन्ना और 25 मिलियन टन चीनी उत्पादन कर रहा है। वर्ष 2030 तक 36 मिलियन टन चीनी और छह सौ मिलियन टन गन्ना के लिए 100 टन प्रति हेक्टेयर औसत गन्ना उपज और ग्यारह प्रतिशत औसत चीनी परता हम प्राप्त कर सकते हैं। संस्थान के तहत विकसित तकनीक जैसे अंतरालित प्रतिरोपण विधि, गडढा बुवाई विधि, केन नोड तकनीक, सिंचाई जल बचत तकनीक, ट्रेंच से बुवाई तकनीक, स्वस्थ गन्ना बीज के लिए उष्ण आर्द्र वायु उपचार यंत्र, गन्ना खेती मशीन, प्रसार और प्रशिक्षण मॉडल के उपयोग से श्रीलंका में गन्ना और चीनी उत्पादन बढ़ाने में सफलता मिल सकती है। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एसके साह ने कहा कि संस्थान और श्रीलंका के बीच साझा प्रजाति विकास कार्यक्रम, गन्ना उत्पादन प्रबंधन, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जैविक कीट और बीमारी प्रबंधन, पोस्ट हारवेस्ट प्रबंधन, गन्ना खेती मशीनों का विकास, मौसम आधारित गन्ना कृषि पद्धति, आधुनिक प्रशिक्षण तकनीक इत्यादि क्षेत्रों में साझा शोध और विकास कार्यक्रमों की जरूरत पर सहमति हुई। लंका से आए इन वैज्ञानिकों का भ्रमण का मकसद संस्थान के तहत किए जा रहे शोध कार्यों और विकसित गन्ना तकनीकों का अध्ययन, साझा शोध और तकनीकी विकास के कार्यक्रमों पर विचार विमर्श करना है। पिछले साठ सालों में संस्थान के तहत किए गए गन्ना शोध और विकास में उपब्धियों को देखते हुए श्रीलंका सरकार अपने देश में गन्ना और चीनी उत्पादन की स्थिति को बेहतर करने के लिए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान को तकनीकी सहायता के लिए चिन्हित किया है। इस दिशा में पिछले वर्ष 2012 में श्रीलंका के मंत्री रेगीनाल्ड कूरे की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय दल संस्थान का भ्रमण कर चुका है। इस मौके पर संस्थान के डॉ. एके शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक और डॉ. एम स्वपना ने भी अपने विचार रखे।

भारतीय गन्ना अनुसंधान के भ्रमण के दौरान श्रीलंका के केंद्रीय चीनी उद्योग मंत्री लक्ष्मण सेनाविरत्ने साथ में आईआईएसआर के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन व अन्य

- लखनऊ पहुंचे श्रीलंका गन्ना शोध संस्थान के प्रतिनिधिमंडल व आईआईएसआर के वैज्ञानिकों में बनी सहमति

लखनऊ

कैनविज टाइम्स

4 मंगलवार, 18 जून 2013

गन्ने से मजबूत होंगे भारत-लंका के रिश्ते

कैनविज़ टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। श्रीलंका में गन्ना खेती व चीनी उद्योग को बढ़ावा देने में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान तकनीकी सहायता देकर भारत व श्रीलंका के बीच एक हजार से भी ज्यादा वर्षों के आपसी रिश्तों को और मजबूती दे सकता है। श्रीलंका के केंद्रीय चीनी उद्योग मंत्री लक्ष्मण सेनाविरत्ने ने यह बात अनुसंधान के अफसरों से कही। श्री सेनाविरत्ने की अध्यक्षता में श्रीलंका गन्ना शोध संस्थान के वैज्ञानिकों का एक दल यहां पहुंचा है।

16 जून से चार दिवसीय भ्रमण पर आए श्रीलंका के वैज्ञानिकों में श्रीलंका गन्ना शोध संस्थान के निदेशक डॉ. एपी कीर्थिपाला व फसल सुधार विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए. विजयसूरिया शामिल हैं। इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य संस्थान द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों व विकसित गन्ना तकनीकों का अध्ययन, साझा शोध व तकनीकी विकास के कार्यक्रमों पर विचार-विमर्श, भारतीय गन्ना उत्पादन व्यवस्था व चीनी उद्योग का श्रीलंका के उच्च

स्तरीय अधिकारियों द्वारा अध्ययन करना है।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने संस्थान की उपलब्धियों को बताते हुए कहा कि पिछले साठ वर्षों में संस्थान ने अनेक तकनीकों का विकास किया है जिसके प्रयोग से आज देश लगभग 350 मिलियन टन गन्ना व 25 मिलियन टन चीनी उत्पादन कर आत्मनिर्भर हो गया है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2030 तक 36 मिलियन टन चीनी व 600 मिलियन टन गन्ना के लिए 100 टन प्रति हेक्टेयर औसत गन्ना उपज का लक्ष्य है। 11 प्रतिशत औसत चीनी परता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संस्थान अपने नए शोध कार्य कर आधुनिक उत्पादन तकनीक को विकसित करने के लिए संकल्पबद्ध है। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.. एके साह ने कहा कि संस्थान व श्रीलंका के बीच साझा प्रजाति विकास कार्यक्रम, गन्ना उत्पादन प्रबंधन, मृदा स्वास्थय प्रबंधन, जैविक कीट व बीमारी प्रबंधन, पोस्ट हारवेस्ट प्रबंधन, गन्ना खेती मशीनों का विकास, मौसम आधारित गन्ना कृषि पद्धति, आधुनिक प्रशिक्षण तकनीक आदि क्षेत्रों के बारे में श्रीलंका के वैज्ञानिकों को जानकारी दी गई और साझा शोध व विकास कार्यक्रमों की आवश्यकता पर सहमति बनी। संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एके शर्मा ने भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के कार्यक्रमों, उपलब्ध संसाधनों व तकनीकों को श्रीलंका के उच्च स्तरीय दल के समक्ष प्रस्तुत किया। संस्थान में अंतराष्ट्रीय कार्यक्रम की प्रभारी डा एम. स्वपना ने श्रीलंका के उच्च स्तरीय दल भ्रमण का समन्वयन किया। उन्होंने आशा की कि भविष्य में श्रीलंका और संस्थान के बीच शोध कार्यक्रमों पर और गहन साझा विचार-विमर्श होगा। इसके तहत दोनों देशों के वैज्ञानिक एक-दूसरे देश का भ्रमण कर आवश्यकतानुसार गन्ना उत्पादन तकनीक विकसित करेंगें जिससे गन्ना व चीनी उत्पादन की स्थिति को और बेहतर किया जा सकेगा।

कल्पतरु एक्सप्रेस
www.kalptaruexpress.com

भारत-श्रीलंका की दोस्ती बहुत पुरानी: सेनाविरत्ने

आईआईएसआर श्रीलंका के गन्ना एवं चीनी उद्योग को बढ़ावा देने के लिए देगा तकनीकी सहयोग

कल्पतरु समाचार सेवा

लखनऊ। श्रीलंका के केन्द्रीय चीनी उद्योग मंत्री लक्ष्मण सेनाविरत्ने ने कहा है कि श्रीलंका में गन्ना खेती एवं चीनी उद्योग को बढ़ावा देने में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ तकनीकी सहायता प्रदान कर भारत एवं श्रीलंका के बीच एक हजार से भी ज्यादा वर्षों के आपसी रिश्तों को और मजबूती प्रदान कर सकता है। वे सोमवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में भारतीय वैज्ञानिकों के साथ बैठक कर रहे थे।

श्रीलंका के केन्द्रीय मंत्री सेनाविरत्ने की अध्यक्षता में श्रीलंका गन्ना शोध संस्थान के वैज्ञानिकों का एक दल 16 जून को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ का औपचारिक भ्रमण पर आया है। यह दल 20 जून तक संस्थान में गन्ने की उन्नत खेती और चीनी उद्योग के तकनीकी पहलू को समझेगा। इस उच्चस्तरीय दल में श्रीलंका गन्ना शोध संस्थान के निदेशक डॉ. एपी कीर्थिपाला व फसल सुधार विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए विजयसूरिया शामिल हैं। इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य संस्थान द्वारा किये जा रहे शोध कार्यों व विकसित गन्ना तकनीकों का अध्ययन, साझा शोध व तकनीकी विकास के कार्यक्रमों पर विचार विमर्श, भारतीय गन्ना उत्पादन व्यवस्था एवं चीनी उद्योग का श्रीलंका के उच्चस्तरीय अधिकारियों द्वारा अध्ययन करना है। पिछले साठ वर्षों में संस्थान द्वारा गन्ना शोध एवं विकास में अतुलनीय उपब्धियों को संज्ञान में लेते हुए श्रीलंका सरकार ने अपने देश में गन्ना एवं चीनी उत्पादन की स्थिति को मजबूत करने के लिए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ को तकनीकी सहायता के लिए

■ श्रीलंका गन्ना शोध संस्थान व भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक साझा कर रहे विचार

चिन्हित किया है। इस दिशा में पिछले वर्ष श्रीलंका के मंत्री रेगीनाल्ड कूरे की अध्यक्षता में उच्चस्तरीय दल संस्थान का भ्रमण कर चुका है। इसी के तहत श्रीलंका का दूसरा दल संस्थान के भ्रमण पर आया है। श्रीलंका ने यहां की विकसित तकनीकों को अपने देश में अपनाकर गन्ना एवं चीनी उत्पादन बढ़ाने का मन बनाया है।

संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने संस्थान की उलब्धियों को बताते हुए कहा कि पिछले साठ वर्षों में संस्थान ने अनेक तकनीकों का विकास किया है जिनके प्रयोग से आज देश में लगभग 350 मिलियन टन गन्ना तथा 25 मिलियन टन चीनी उत्पादन कर आत्मनिर्भर बन गया है। संस्थान वर्ष 2030 तक 36 मिलियन टन चीनी व 600 मिलियन टन गन्ना के लिए 100 टन प्रति हेक्टेयर औसत गन्ना उपज पर काम कर रहा है। इसके अलावा 11 प्रतिशत औसत चीनी परता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संस्थान नये शोध कार्यों को क्रियान्वित कर रहा है। आईआईएसआर आधुनिक उत्पादन तकनीक को विकसित करने के लिए दृढ़ संकल्प है। संस्थान द्वारा विकसित तकनीक जैसे अंतरालित प्रतिरोपण विधि, गड्ढा बुआई विधि, केन नोड तकनीक, सिंचाई जल बचत तकनीक, देर से बुआई तकनीक, स्वस्थ गन्ना बीज के लिए उष्ण आर्द्र वायु उपचार यंत्र, गन्ना खेती मशीन, प्रसार एवं प्रशिक्षण मॉडयूल के उपयोग से श्रीलंका में गन्ना एवं चीनी उत्पादन बढ़ाने में आशातीत सफलता मिल सकती है।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने कहा कि संस्थान व श्रीलंका के बीच साझा प्रजाति विकास कार्यक्रम, गन्ना उत्पादन प्रबंधन, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जैविक कीट व बीमारी प्रबंधन, पोस्ट हारवेस्ट प्रबंधन, गन्ना खेती मशीनों का विकास, मौसम आधारित गन्ना कृषि पद्धति, आधुनिक प्रशिक्षण तकनीक इत्यादि क्षेत्रों में साझा शोध एवं विकास कार्यक्रमों की आवश्यकता पर सहमति हुई है। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एके शर्मा ने कार्यक्रमों, उपलब्ध संसाधनों एवं तकनीकों पर संक्षिप्त परिदृश्य को श्रीलंका के उच्च स्तरीय दल के समक्ष प्रस्तुत किया। संस्थान में अंतराष्ट्रीय कार्यक्रम की प्रभारी डॉ. एम स्वप्ना ने श्रीलंका के उच्च स्तरीय दल के भ्रमण का समन्वयन कर रही हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि भविष्य में श्रीलंका और संस्थान के बीच शोध कार्यक्रमों पर और गहन साझा विचार-विमर्श होगा। दोनों देशों के वैज्ञानिक एक-दूसरे देश का भ्रमण करके आवश्यकतानुसार गन्ना उत्पादन तकनीक विकसित करेंगे। इससे गन्ना एवं चीनी उत्पादन की स्थिति को और बेहतर किया जा सकेगा।

अमर उजाला लखनऊ । मंगलवार 18 जून 2013

श्रीलंका में चीनी उत्पादन बढ़ाएगा गन्ना संस्थान

जरूरत की छह प्रतिशत चीनी ही पैदा कर पाता है श्रीलंका

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। भारत और श्रीलंका के रिश्तों में लखनऊ का इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ शुगरकेन रिसर्च (आईआईएसआर) नई मिठास घोलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। श्रीलंका में गन्ना उत्पादन बढ़ाने, नई तकनीकों का प्रसार और शक्कर के उत्पादन में आत्मनिर्भरता लाने में आईआईएसआर द्वारा तैयार तकनीकों, प्रजातियों की उपयोगिता का अध्ययन करने को श्रीलंकाई वैज्ञानिकों का दल लखनऊ आया है। दल के साथ चीनी उद्योग मंत्री लक्ष्मण सेनाविरत्ने भी हैं। वे यहां 20 जून तक रहेंगे और इस दौरान उन संभावनाओं को खंगालेंगे, जिनके जरिये श्रीलंका में चीनी उद्योग के विकास को बढ़ावा दिया जा सकेगा।

श्रीलंका के चीनी उद्योग मंत्री लक्ष्मण सेनाविरत्ने का कहना था कि भारत और श्रीलंका के बीच 1000 से अधिक वर्षों से घनिष्ठ रिश्ते रहे हैं। श्रीलंका में गन्ना खेती और चीनी उद्योग को बढ़ावा देते हुए भारत और आईआईएसआर इन संबंधों को और प्रगाढ़ बना सकते हैं। श्रीलंका अपनी जरूरत की सिर्फ छह प्रतिशत चीनी ही अपने यहां तैयार कर पाता है। 94 प्रतिशत चीनी आयात की जाती है। श्रीलंका में पेट्रोलियम उत्पादों के बाद चीनी के आयात में सबसे ज्यादा विदेशी मुद्रा की खपत होती है। सेनाविरत्ने ने बताया कि मेरे देश का लक्ष्य अगले कुछ दशकों में चीनी की जरूरत का 60 प्रतिशत उत्पादन श्रीलंका में ही सुनिश्चित करना है। भारत गन्ना शोध कार्यों में बहुत आगे है, ऐसे में वह श्रीलंका की मदद कर सकता है। दल में श्रीलंका गन्ना शोध संस्थान के निदेशक डॉ. एपी कीर्थिपाला व फसल सुधार विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए विजयसूर्या भी शामिल हैं। उन्होंने संस्थान में विभिन्न प्रयोगशालाएं देखीं, प्रजातियों का अध्ययन किया और वैज्ञानिकों से वार्ता की। मंगलवार को वे कुशीनगर में चीनी मिल देखेंगे। आईआईएसआर के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने उन्हें संस्थान द्वारा बीते 60 वर्षों में चीनी पर किए शोध के विकास के बारे में बताया। आज देश में लगभग 350 मिलियन टन गन्ना और 25 मिलियन टन चीनी का उत्पादन होता है। भारत चीनी निर्यातक देश है। वर्ष 2030 तक 36 मिलियन टन चीनी व 600 मिलियन टन गन्ना उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एके शर्मा ने संस्थान के क्रियाकलापों से अवगत करवाया। अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों की प्रभारी डॉ. एम स्वपना ने दल के भ्रमण का समन्वय किया।

वहां के चीनी उद्योग मंत्री ने मांगा तकनीकी व वैज्ञानिक सहयोग

इन क्षेत्रों में साथ हो सकता है काम

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने कहा कि संस्थान व श्रीलंका के बीच प्रजाति विकास के साझा कार्यक्रम, गन्ना उत्पादन प्रबंधन, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जैविक कीट व बीमारी प्रबंधन, पोस्ट हार्वेस्ट क्रॉप मैनेजमेंट, गन्ना खेती मशीनों का विकास, मौसम आधारित गन्ना कृषि पद्धति, आधुनिक प्रशिक्षण जैसे क्षेत्रों पर काम करने की संभावनाएं तलाशी जा रही हैं।

राजधानी
वॉयस ऑफ मूवमेंट
www.voiceofmovement.in
5
मंगलवार, 18 जून, 2013

भारत से उत्पादन तकनीक सीखेंगे श्रीलंकाई किसान

कार्यालय संवाददाता

लखनऊ। पड़ोसी देश श्रीलंका से रिश्तों में आई कड़वाहट को दूर करने के लिए सरकार गन्ने का सहारा ले रही है। देश की विकसित गन्ना एवं चीनी उत्पादन प्रणाली का लाभ जल्द ही श्रीलंकाई किसान भी उठाएंगे। पड़ोसी मुल्क के किसानों को यह तकनीक गन्ना शोध संस्थान के वैज्ञानिक सिखाएंगे। दोनो देशों में इसको लेकर सहमति भी बन रही है। इसी को लेकर श्रीलंका के केन्द्रीय चीनी उद्योग मंत्री लक्ष्मण सेनाविरत्ने के नेतृत्व में वैज्ञानिकों का दल पांच दिवसीय दौरे पर राजधानी पहुंचा है।

सोमवार को गन्ना शोध संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन से मिला। इस मौके पर श्रीलंकाई मंत्री ने

गन्ना शोध संस्थान के वैज्ञानिक देंगे जानकारी

कहा कि श्रीलंका में गन्ना खेती एवं चीनी उद्योग को बढ़ावा देने में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान से तकनीकी सहायता प्रदान कर दोनो देशों के बीच एक हजार से भी ज्यादा वर्षों के आपसी रिश्तों को और मजबूती प्रदान कर सकता है। उन्होंने बताया कि इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य संस्थान द्वारा किये जा रहे शोध कार्यों व विकसित गन्ना तकनीकों का अध्ययन, साझा शोध व तकनीकी विकास के कार्यक्रमों पर विचार-विमर्श, भारतीय गन्ना उत्पादन व्यवस्था एवं चीनी उद्योग का श्रीलंका के उच्च स्तरीय अधिकारियों द्वारा अध्ययन करना है।

the pioneer

LUCKNOW TUESDAY | JUNE 18, 2013

city 05

IISR to extend technical support to Sri Lanka's sugar industry

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

The Indian Institute of Sugarcane Research will extend technical support to improve the sugar industry in Sri Lanka.

The IISR, Lucknow, may be instrumental in improving and increasing sugarcane and sugar yield in Sri Lanka and this will further strengthen the 1000-year-old relationship between Sri Lanka and India. These views were expressed by the Minister, Lakshman Senewiratne, Ministry of Sugar Industry Development, Government of Sri Lanka, here on Monday while on a visit to the IISR. A high-level delegation under the leadership of the Minister, Senewiratne, comprising Dr AP Keerthipala, Director, and Dr A Wijesuriya, head, Crop Improvement, Sugarcane Research Institute, Sri Lanka, is on a four-day -long visit to the IISR. The high-level Sri Lankan delegation is visiting the IISR not only to study its research programmes but also the technology developed by it and the functioning of the sugar industry in India.

While highlighting the technological achievements of IISR during the past 60 years, Dr S Solomon, Director, IISR, said that large-scale adoption of the institute's technologies contributed a lot in achieving 350 million tonnes of sugarcane and 25 million tonnes of sugar production at present which made India self-sufficient on the sugar front. He said to achieve the target of 36 million tonnes of sugar and 600 million tonnes of sugarcane by the year 2030 India had to produce 100 tonnes per hectare of sugarcane on an average with a sugar recovery of 11 per cent. He said that the IISR was committed to contributing considerably in achieving this target by implementing innovative research programmes and developing low-cost, high-yielding sugarcane technology. The Director said that the technologies developed by the IISR like STP, ring method of planting, cane node technique, water saving technique, late planting technique, moist hot air treatment (MHAT) for healthy seed cane production, sugarcane cultivation machines, extension and training module etc. might be of great help in increasing the sugarcane and sugar production in Sri Lanka and the institute was ready to extend all technical help for the spread of these technologies in Sri Lanka.

Dr AK Sah, Senior Scientist at IISR, said that there may be a few possible areas of research like joint varietal development programme, sugarcane production management, soil health management, bio-intensive management of pests and diseases, post-harvest management, design and development of sugarcane machines, crop and weather interaction, climate resilience, cane agriculture, innovative training and consultancy programme where the IISR and Sri Lanka may join hands for collaborative and mutual exchange programmes.

HINDUSTAN TIMES, LUCKNOW
TUESDAY, JUNE 18, 2013

IISR Lucknow to help Sri Lanka's sugar industry

LUCKNOW: The Indian Institute of Sugarcane Research, Lucknow will extend technical support to improve the sugar industry in Sri Lanka. The IISR-Lucknow was instrumental in improving and increasing sugarcane and sugar yield in Sri Lanka and this would further strengthen the over 1000-year-old relations between the two countries, said Lakshman Senewiratne, the Sri Lankan minister for sugar industry development, on Monday while visiting the institute. **HTC**